देश में संसाधनों की कमी नहीं है। जरूरत आखिरी छोर तक उसे पहुंचाने की है। कमी सुशासन की है। जिन राज्यों में निर्धारित समय पर काम पूरा किया जा रहा है, वहां बदलाव दिखने लगा है। डिजिटल डेशबोर्ड व्यवस्था शुरू की गई है, इसमें पूरी व्यवस्था की आसानी से निगरानी हो सकेगी। मेरा मानना है कि भारत सरकार के विजन, राज्य सरकार की योजनाएं और स्थानीय इकाईयां सभी विकास के एकसूत्र में जुड़ जाएंगी को इच्छित परिणाम आने लगेंगे। इसलिए भारत सरकार द्वारा जनप्रतिनिधियों को जोड़ने का काम किया जा रहा है। अब ग्रामीण जीवन में चीजें थोपी नहीं जाती हैं। इसलिए विकास कार्य में गति लाने की दिशा में बहुत बड़ी सफलता मिली है। लोकतंत्र की सफलता तब होती है जब जनभागीदारी से देश चले। जनभागीदारी से गांव की विकास यात्रा चले, जनभागीदारी से नगर की विकास यात्रा चले और इसलिए जनता के साथ सरकार का संवाद अनिवार्य होता है।

जीवन में संवाद होना चाहिए। यह कार्य ऊपर से नीचे होना चाहिए। इससे योजनाओं के क्रियांवयन में सहायता मिलती है। इसलिए मोबाइल एप से गांव का व्यज्ति अपनी बात ऊपर तक पहुंचा सकता है। इससे काम में लापरवाही करने वाले दबाव में आ जाते हैं। भारत में कृषि और पशुपालन का ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। इसलिए पशुपालन, खेती, हथकरघा, हस्तकला से जुड़े लोगों के लिए हम अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में काम कर रहे हैं। हम 2022 में भारत की आजादी के 75 साल में देश के किसानों की आय दोगुना करने का संकल्प ले करके चल रहे हैं। एक तरफ किसान की लागत कम करना है। दूसरी तरफ उसके उत्पादन को बढ़ाना है। इन दोनों चीजों के लिए हमें टेज़्नोलॉजी की मदद लेनी होगी। हमें आधुनिकता की तरफ जाना होगा। पशुपालन में पशु की संज़्या भले कम हो, लेकिन दूध का उत्पादन ज्यादा हो यह प्रयास किया जा रहा है। प्रति पशु दूध का उत्पादन जितना तेजी से बढ़ेगा, ग्रामीण अर्थ जीवन उसी गति से आगे बढ़ेगा। दुनिया में शहद की बहुत मांग बढ़ रही है। हम गांवों में मधुमज़्खी पालन को बढ़ावा दें, किसान पशुपालन के साथ जुड़ जाए, तो बड़ा परिवर्तन आएगा। इस चीजों के लिए भारत दुनिया का बहुत बड़ा बाजार है। इसमें पांच से दस साल मेहनत करने की जरूरत है, इसके बाद परिणाम आना शुरू हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता अभियान बहुत प्रभावी तरीके से चला है। ग्रामीणों ने गंदगी के बीच जीवन नहीं बिताने का संकल्प लेकर काम किया और उससे ऐसी जागरूकता आई है कि देश के हर छोटे से छोटे गांव भी सफाई में अव्वल हो गए हैं। इसके साथ गांवों में शौचालय बनाने का काम तेज हुआ है। जो लोग इससे

पहले परहेज करके चलते थे, उन्होंने इसका नाम इज्जतघर रख लिया है। मैं उन गांवों को हृदय से बधाई देता हूं, जिन्होंने घर की इज्जत के लिए एक बहुत बड़ा कदम उठाया है। उन गांव वासियों को नमन करता हूं कि जिन्होंने इस